मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	सोमवार 10 मई 1982	संख्या 1

Board of trusties of Faqir Library Charitable Trnst (Regd.) Manavta Mandir HOSHIARPUR.

1. Sh. K. M. Pardesi, President
2. Master Mohan Lal, Vice President
3. Sh. Subash Chander Kalia General Secretary
4. Sh. Harbans Lal, Joint Secretary
5. His Holiness Anand Dayal Ji Maharaj
6. His Holiness Anand Rao ji Maharaj
7. Sh. S. N. Bhardwaj
8. Dr K. L. Jaura, M. Sc. Ph. D-
9. Sardar Lal Singh
10. Dr. Darshan Singh
11. Sh. Puran Chand.
12. P. Narain Dass Dogra
13. Sh. Ram Rakha Chouda

Executive Secretary cum Cashier
Dr. Paras Ram Aggarwal

परम दयाल फ़कीर सत्संग, अलीगढ़।

दिनांक 29-1-81

क़ादरी बाबा को सत्संग

मैंने इस काम से कोई दौलत नहीं कमाई। किसी सत्संगी के घर का खाता नहीं। फिर मैं यह काम क्यों करता हूं? अपनी निजी ग़रज़ के लिए। बात यह है दोस्तो! छोटी उम्र से उस मालिक के मिलने का ख्याल था, राम, कृष्ण, ख़ुदा, ईश्वर, परमेश्वर को मानने वाला था। सोलह, सत्रह वर्ष की उम्र में मैंने कुछ ग़लतियां खाईं, एक बार वेश्या के पास गया, छः महीने गोश्त खाया, तीन बार रम पी, एक बार जुआ खेला, सवा रुपया हारा। मेरा बड़ा भाई श्री रामनारायण, जो मेरे ताया का और मेरी मौसी का लड़का था, वह सनातनिष्ट था, रोज़ रामायण, पढ़ा करता था। जिस साल कांगड़ा वैली में भूचाल आया और कांगड़ा तबाह हुआ

उस वर्ष का जिक्र है कि मेरे आगे गोश्त का कटोरा रखा हुआ था जो दूसरे नौकर ने बना कर दिया था, उसमें से भाप निकलती थी, मेरा बड़ा भाई फुलके बना के लाया और उसने आँख और नाक बन्द किया व दो फुलके मेरी थाली में फेंके। ख्याल आया कि भई! एक ही खून है, यह किधर जा रहा है और फ़कीर चन्द! तू किधर जा रहा है? बचपन मेरा बड़ा अच्छा था परन्तु बुरी संगत में पड़ गया था तब से मुझे अपने कर्म पर ग्लानि आई क्योंकि ये पाप मैंने किये थे। चूंकि रामायण सुना करता था रात को मेरे दिल में ख्याल आया :—

नाना भांति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

मैंने कहा जब पीछे राम आता रहा है तो अब भी आयेगा, इस लिए मैं राम को मिलने के लिए रोया करता था। कन्स्ट्रक्शन लाइन थी, मैं पागलपन में चांद की चाँदनी में फिरता रहता और रोता रहता कि हे राम! मुझे मिल जा, आदमी के रूप में

मिल जा, मिल जा । उस वक्त एक बूढ़ा आदमी सफैद दाढ़ी, दोतारा उसने लिया हुआ मेरे सामने आया । उसने कहा क्यों रोता है ? मैंने कहा मैं राम को मिलना चाहता हूं । उसने कहा तेरे वास्ते आया हुआ है । इस सिलसिले में एक दिन प्रातः पाँच बजे दाता दयाल का एक दृश्य मेरे सामने आया था जिससे मैं उनके चरणों में गया । उन्होंने यह राधा-स्वामीमत, सन्तमत या फ़कीरों का मज़हब मुझे दिया, इसमें खण्डन था । स्वामी जी ने और कबीर साहिब ने सबका खण्डन किया कि वेदान्त भी काल-मत में है. सूफ़ीइज्म भी कालमत में है, सनातन नहीं पहुंचा, राम. कृष्ण काल के अवतार, इस्लाम और ईसाई नहीं पहुंचे, जैन नहीं पहुंचा तो मैं रोया करता था कि मैं कहां फँस गया । मेरा विश्वास अपने गुरु महाराज से तो टूटा नहीं और यह जो वाणी थी यह मुझे समझ नहीं देती थी । उस वक्त मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते सच्चा हो कर चलूंगा जो कुछ मेरा अनुभव होगा दुनिया को बता जाऊंगा । मेरे काम करने का एक कारण तो यह है ।

दूसरे मैं दाता दयाल को तंग किया करता था कि मुझे वह घर बताओ जो तुम्हारा राधास्वामीमत या कबीर साहिब कहते हैं। जब 1918 ई० में दिन के 9 बजे से शाम के 5 बजे तक मैं उनको तंग करता रहा, जहां बैठते रोता तो उन्होंने कहा सुबह बताऊंगा। सुबह जब मैं गया तो मुझे कहा कर झोली। मैंने पल्ला किया, उन्होंने एक नारियल और पाँच पैसे मेरी झोली में डाल दिये और मेरे माथे पर तिलक लगाकर मेरे पांवों पर मत्था टेक दिया। मुझे कहने लगे, बेवकूफ ! मेरा हुक्म मानो। क्या हुक्म ? नामदान दिया करो और सत्संग कराया करो। मैं खुश हुआ और मुझे अफसोस भी हुआ। खुश क्यों हुए ? मैंने कहा जी अहंकार आ गया। अफसोस क्यों किया ? मैंने कहा मेरे पास तो कुछ है नहीं। मुझे कहने लगे फकीर ! तुममें 99 ऐब हो सकते हैं परन्तु एक सच्चाई है यह ले जायगी, तुमको सच्चा ज्ञान देने वाला सत्तगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। इस तरह उन्होंने मुझे यह काम दिया और तीन ड्यूटियें मेरे जिम्मे लगाईं :—

तू तो आया नर देही में धर फ़कीर का भेसा,
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा।
तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, तेरी उत्तम देही,
जग कल्याण जगत् में आया परम दयाल सनेही।

यह उनका हुक्म था और 1933 ई० में जब वे सुनाम गये बड़ा भारी सत्संग हुआ। सिख स्टेट थी कोई चार हज़ार आदमी आये। आरती पढ़ी गई, मुझे कहने लगे हुक्का ले आओ। मैंने हुक्का भर दिया हुक्का पीते रहे और धुआं छोड़ते रहे, 35 मिनट वह मुंह से बोले नहीं। संगत सारी उठ गई केवल पांच छः सौ आदमी रह गये, उस वक्त उन्होंने मुझे सत्संग कराया और कहा फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। ज़माना बदल जायेगा मेरा तर्ज़े बयान भी लोग पसन्द नहीं करेंगे। तो यह कारण है मेरे काम करने का। 95 साल की मेरी उम्र है अब गाड़ी में तो सफ़र होता नहीं, हवाई जहाज में जाता हूं, लोग बुला लेते हैं मैं चला जाता हूं। कुछ मन्दिर का ख्याल भी है परन्तु मैं किसी की आंखों में मिट्टी डाल कर किसी से पैसा लेना नहीं चाहता। सच्चाई बयान करता हूं,

खुशी से जिसकी मर्ज़ी चाहे दे या न दे इसका कोई सवाल नहीं :—

आज मैं यहां आया। जो कुछ मैंने सन्तमत से समझा है वह अगर मैं आप को बयान करूं तो शायद आप न समझ सकें परन्तु फिर भी दाता का एक शब्द सुनिये :—

नैर भूला भूला क्यों भटके ले चैन सबेरा है भाई।

हम भटकते ही हैं न! कोई कहता है मेरे घाटा पड़ गया, कोई कहता है मेरा पुत्र नालायक है, कोई कहता है मुझे यह मुसीबत है, हम भटकते ही फिरते हैं न! कभी इधर, कभी उधर। कभी कुछ चाहते हैं, कभी कुछ चाहते हैं। तो दाता दयाल फ़रमाते हैं भई! काहे को भटकता फिरता है :—

आना, जाना भरम है मन का, उसके झटके क्यों भटके।
बन्धन, मुक्ति अज्ञान की बातें, मूरख सब इनमें अटके।
जा के हृदय अटक समाना, उन भटकन में वो लटके।
ज्ञानी ध्यानी मरम न जानें, उन के पास न तू फटके।

अब तुम सोचो ! हम सब दुनिया वाले, कोई कहता है ध्यान करो, कोई कहता है ज्ञान करो, सब कहते हैं कि नहीं कहते ? परन्तु वो दाता तो यह कहते हैं कि तू उनके पास मत जा। क्यों न जा भई ? यह समझ नहीं आती थी। यह समझ मुझ को आप लोगों से आई। कैसे आई ? जब लोग मुझे कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्दर प्रकट हुआ और मेरे रूप ने यह कर दिया, यह कर दिया, यह कर दिया और मैं नहीं होता तो मुझे यक़ीन आ गया कि जिस तरह से उनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ और मैं था इस तरह से जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट है वह भी सारा मेरे अपने मन की कल्पना क़ादरी साहिब यहां बैठे हुए हैं ? बस बैठे रहो हीं, सुनो ! आप भी पीरी करते हैं, अब तुम सोचो री बात को, मैं किताबों में भी लिखता रहता हूं, रे रूप के रोज़ ऐसे किस्से सुनने में आते हैं तो सोचने के लिए मजबूर हूं कि फकीर चन्द तू तो ता नहीं, तुझे पता नहीं तो साबित हुआ कि जिस ह उनके अन्दर जो कुछ प्रकट हुआ वह उनका ही मन का ख्याल था तो मेरे अन्दर भी

जो कुछ मैं सोचता था, गुरु का ध्यान करता था, सुमिरन करता था या जो कुछ भी मेरे मन में होता था वह क्या था ? वह मेरे अपने मन की कल्पना थी। तो जब मुझे यक़ीन हो गया कि मन की कल्पना है तो फिर अब मैं क्या करता हूं ? मैं मन को छोड़ जाता हूं न शक्ल है न रूप है। मन को छोड़ कर के ऊपर है प्रकाश और शब्द, रोशनी और आवाज़ वह जो रोशनी और आवाज़ है उसमें जब मैं ज़ाता हूं तो उस चीज़ की तलाश करता हूं जो मेरें अन्दर में रोशनी को देखती है और शब्द को सुनती है। तुम अभ्यास में बैठते हो तुम्हारे अन्दर सूरज प्रकट होता है, देखने वाला कोई और है सूरज कोई और है, तुम आवाज़ सुनते हो तुम और हो आवाज़ और है, है कि नहीं ? वह चीज़ जो देखने वाली है वह है तुम्हारी और हमारी ज़ात। हम सब वो हैं परन्तु इस दुनिया व जिस्म में आकर भ्रम में भटक गये, यह है राज़ फ़कीरों का। जो आदमी सब को छोड़ के अपने उस रूप में रहता है और ठहर सकता है उसका नाम है फ़कीर। फ़कीर और सन्त किसे कहते हैं ? फ़कीर और सन्त वह कहलाता

है जो मन के तमाम ख्यालात, विचार, शक्लों, इबादत व माबूदियत से आज़ाद है अर्थात् सब से अलग हो कर अपने रूप, जो उसकी अपनी असलीयत या ज़ात है, जो मेरे और तुम्हारे अन्दर में रह कर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है, उसमें रहता है। दाता का शब्द है :—

कौन है शादाँ यहां शादाँ फ़क़्त जाते फ़कीर,
खुश नहीं हरगिज तवंगर माल वो ज़र वाले अमीर।
तर्के दुनिया तर्के उक़बा तर्के मौला कर दिया,
तर्के का भी तर्क है इस तर्क से दिल भर गया।

मौला तक तो तर्क हो गया मेरा, परन्तु तर्क ... तर्क अभी नहीं हुआ। मुझसे यह तर्क किसने कराया ? केवल आप सत्संगियों ने। इस लिए इस उम्र में मैं अगर किसी को मुरशद मानता हूं तो जो मुझे गुरु मानते हैं मैं उनको अपना मुरशद मानता हूं। अब मैं बनारस गया था वहां एक डा० ...तनाम सिंह है, देर हुई वह बीमार हो गया था, डाक्टरों ने जवाब दे दिया। उसने कहा भई ! तुम मुझे छोड़ दो। वह मेरी फोटो सामने रख के बैठ

वो जो इज्जत और मान लूंगा वह तो मेरी जान को खा जायेगी।

मैं डर गया हूं, मैंने पिछले सन्तों का हाल देखा, बाबा सावन सिंह जी का हाल देखा, दाता दयाल जी का धाम उजड़ गई, दयाल राधास्वामी दो साल बीमार रहे, महाराज साहिब कैन्सर से मरे, सरकार साहिब टी. बी. से मरे, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, जेसस क्राईस्ट का क्या हाल हुआ, तुलसीदास जिसने रामायण लिखी है पिछली उम्र में उसको वह दर्द रहा जिसका हिसाब नहीं। मैं सोचता हूं इतने बड़े-बड़े महापुरुष जो गुरु बने हुए थे ओर खुदा के पूजने वाले थे उनको भी तकलीफें क्यों आईं? मुझे खुद पता नहीं मैं कैसी मौत मरूंगा परन्तु मैं डर गया हूं और मुझे यह वहम आ गया है कि शायद इनको इस लिए तकलीफें आई हैं कि इन्होंने पद रख कर और लोगों को अज्ञान में रख कर के पब्लिक से गलत मान और गलत इज्जत ली है। मेरी इज्जत अगर कोई ज्ञानदाता अर्थात् गुरु की हैसीयत से करता है तो मैं उसको कबूल करने को तैयार हूं बाकी करामात की हैसीयत से या इस ख्याल से कि मैं

प्रसाद से किसी को बच्चा हो गया इस तरह से नहीं। अरे ! क्या पूछते हो तुम, इन गुरुओं ने तुम लोगों को बेवकूफ बना के लूटा है। मेरे पास मेरी जिन्दगी में कम से कम तीन सौ पचास औरतें आईं जिनके बच्चे नहीं थे, प्रसाद ले गईं उनके बच्चे हो गये। चार औरतें तो ऐसी आईं जिनकी पचास-पचास साल की उम्र थी, बचपन से उनको माहवारी नहीं आई और उनके लड़के हो गये। किसी का नाम मैंने श्री भगवान रखा, किसी का नाम मैंने श्रीकृष्ण रखा तो किसी का नाम मैंने रामावतार रखा, मेरी अपनी लड़की है 26 साल उसकी शादी किये हुए हो गये उसके बच्चा नहीं हुआ, तो क्या मैं देता हूं ? आप समझ गये मेरी बात को ? मैं अपनी जान को बचाना चाहता हूं, जब कि मैंने यह देखा कि बड़े-२ महात्मा और राधास्वामी दयाल जिनके नाम का पन्थ चलता है दो साल बीमार रहे और लिखने वाले ने लिख दिया कि ऐसी करामात अपने अन्दर दिखा कर ली कि डाक्टरों और हकीमों को पता नहीं लगा कि बीमारी क्या है। कौन ऐसा है जो

अपने अन्दर ऐसी बीमारी केवल करामात दिखाने के लिए पैदा कर ले ? ये सब फ़ज़ूल बातें हैं । इस लिए मैं अनामीधाम से फ़कीर के चोले में आ कर बोल रहा हूं ताकि यह जो दुनिया मैं लूट पड़ी है और अज्ञान के अन्धेरे में हम गृहस्थियों को बेवकूफ बना करके लूटा जा रहा है, दुनिया को बता जाऊं कि सच्चाई यह नहीं, यह है । सोचो मेरी बात को ।

आपने मुझे बुलाया, मैं भी अपने सिर पर कोई जिम्मेवारी महसूस करता हूं । अब मैं सच्चाई बयान करता हूं तो मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है । मैंने कोई हेराफेरी नहीं की न कुछ किया इस लिए सुख की नींद सोता हूं :—

4 चश्मे वहदत बीं मिली वहदत का मंजिर देख कर ।

वह वहदत क्या है ? वहदत एकपना है न । इस लिए वह वहदत है आदमी का अपने आप की उस अवस्था में ठहरना जहां उसके सामने न शक्ल है, न कोई रूप है, न कोई प्रकाश है, न कोई शब्द है । वह जो हमारी अवस्था है एक ही है न

वहाँ, मेरा अपना ही आप है न ! वह है वहदत । तो जिसको वहदत रूपी आँख मिल जाती है फिर वह क्या करता है ?

4 कर रहा है रात दिन दुनिया की मंजिल का सफर ।

ऐसा आदमी फ़कीर कहलाता है । उसमें क्या सिफ्त होती है :—

5 चाहे दुनिया ख़्वाब है और ख़्वाब भी जाते फ़कीर,
दामे हिर्स व मालो ज़र में वह नहीं हरगिज़ असीर ।

अगर मैं इस लिए आता हूं कि केवल आप लोगों से पैसे इकट्ठे करके ले जाऊं या मान ले जाऊं तो मैं फ़कीर काहे का हुआ ? यह बताओ मुझे :—

6 ख़ाक में दुनिया मिले और ख़ाक ही है वह मदाम,
वह खुशी से शादमा रहता है हर दम सुबह शाम ।
7 आबिद व माबूदियत, माबूद से आज़ाद है,
खुश मुजिस्सिम दिल का रूह का वह शाद है ।

यह फ़कीरी है । वह किसकी इबादत करेगा, वह तो अपने आप में ठहर गया । आप समझ गये

मेरा मतलब या कि नहीं ! इबादत तो तभी करेगा जब उसके सामने कोई ग़ैर चीज़ आयेगी :—

जिसको देखो इस तरह वह है सच्चा फ़कीर,
दस्तगीरे दो जहां और दो जहां का है वो पीर।

मैं क्या करता हूं, दो जहां क्या हैं ? तुम्हारी जिस्मानियत और तुम्हारी दिलीयत। जो क़ानून जिस्मानी ज़िन्दगी या मानसिक ज़िन्दगी में काम करता है उस किस्म का ख्याल मैं दूसरे को दे देता हूं। वह मेरे ख्याल को कबूल करके अमल करता और कामयाब हो जाता है। ऐसे फ़कीर जहां भी कोई दर्शन या उसका ध्यान करता है का काम बनना चाहिए अगर नहीं बनता तो वह जो फ़कीर है वह फ़कीर नहीं है। अगर मेरा ध्यान करने वालों के काम नहीं बनते, शान्ति नहीं मिलती तो मेरा क़सूर है, तुम्हारा क़सूर नहीं है, बशर्ते कि तुम ध्यान कर सको। जिन लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है, मैं नहीं जाता, मैं कुछ नहीं करता। जिस तरह सूर्य के सामने बैठने से गर्मी आयेगी इसी तरह किसी फ़कीर का दर्शन करने से क़ुदरती बात है कि उसके अन्दर वह

चीज़ आयेगी। जिस तरह औरत को देखने से काम पैदा होता है, पानी को देखने से ठंडक पैदा होती है ऐसे ही किसी सच्चे फ़कीर के दर्शन करने से बशर्ते कि कोई अधिकारी हो उसको फायदा पहुंचना चाहिए। अगर लोगों को यह फ़ायदा पहुंचता है तो इसके मायने यह नहीं कि मैं करता हूं, वह अपने आप ही (Automatically) उनको मिलना चाहिए। मेरी बात को आपने समझ लिया मैंने क्या कहा आपको ? आये हुए हैं क़ादरी साहिब वह भी फ़कीरी करते हैं, उनको बताता हूं कि फ़कीरी क्या चीज़ है।

क़ादरी साहिब ! यह जिन्दगी चार दिन की है, अगर गुरु बन के मैं हेराफेरी करता हूं तो अपने सिर पर बोझ लेके जाता हूं। ये जितने महात्मा हैं ये करते क्या हैं ? रोचक और भयानक बातें बता-बता करके हम गृहस्थियों को अपने जाल में फँसाते हैं, हम तो मूर्ख हैं, हम को पता नहीं कि असलीयत क्या है :—

आया जो कुछ भी समझ में तेरे लिए वो लिख दिया,
तू ने फैलाया था दामन आज उस को भर दिया।

ज़ात में अपनी हुआ गुम तुम भी होना कभी,
मंजिले मक़सूद पर पहुंचोगे यह सुन ले अभी ।

यह मेरे नाम शब्द है, मुझे कह रहे हैं मैं ज़ात में गुम हो रहा हूं तुम भी होना । ज़ात मेरी क्या है ? आपको मैंने बता दिया कि जो चीज़ मेरे अन्दर रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह मेरी ज़ात है । वह रब्ब-उल-आलमीन है या वह परम तत्त्व है । जब तक यह खेल है कर्मभोग खेला जा रहा है, जब टूटेगा कहां जाऊंगा ? वह जो पहला शब्द पढ़ा गया था :—

नर भूला भूला क्यों भटके ले चैन सवेरा है भाई,
आना जाना भरम है मन का इस के झटके क्यों भटके ।

अब यक़ीन हो गया न मुझे कि जो कुछ मेरे मन के अन्दर होता था यह अपने ही मन का वहम है न ! यह कब गया ? जब अपनी ज़ात का पता लगा । आप समझ गये मेरी बात को मैं क्या कहना चाहता हूं ! ये बेचारी औरतें क्या समझेंगी, आप जो समझदार आदमी हैं उनको मैं कहना चाहता हूं । जो यहां पहुंच जाता है उसके लिए यह दुनिया ख्वाब हो जाती है :—

इस लिए ही सब से ज्यादा मुझ को तुम पर नाज़ है,
नाम रौशन तू करेगा यह दिली आवाज़ है ।

दाता दयाल यह मुझे लिख रहे हैं । वो कहते हैं चूंकि तू फ़कीर है फ़कीर बन जा। तू नाम को रोशन करेगा इस लिए मुझको तुम पर गौरव है। नाम क्या है ? महर्षि जी का नाम नहीं ! नाम है कि हम हैं कौन ? अरे ! तुम लोग नाम लेने जाते हो कि नहीं जाते ? कहते हो, नाम ले दो जी ! कोई कहता है अल्लाहू नाम है, कोई कहता है राम नाम, नाम है । अरे दीवानो ! कहां का नाम !! आप कौन हैं भई, तेरा क्या नाम है, मतलब है कि भई ! तू है कौन ? तो नाम के मायने क्या हैं ? आदमी को यह बता देना कि तू है कौन ! समझ रहे हो मेजर साहिब कि मैं क्या कह रहा हूं ? लोग नाम लेने जाते हैं, कोई राधास्वामी नाम जपता है, कोई वाहेगुरु जपता है, ये नाम तो क, ख ग हैं। असली नाम क्या है ? भई, तू है कौन ? मुझ को दाता कहते हैं कि मैं कौन हूं ? मैं वह हूं जो अपने अन्दर प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता है । मैं ही

नहीं तुम भी वही हो, प्रत्येक आदमी वही है। तो मुराशद क्या करता है ? उसको अपना रूप बताता है कि तू है कौन बन्दे ! तू वह है। कौन वह है ? जो तुम्हारे अन्दर में रहता हुआ प्रकाश को देखता है और शब्द को सुनता है। बात समझ में आ गई ? यह तो इस वक्त तक है फ़कीरी का सत्संग।

अब ये गृहस्थी आये हुए हैं, आप लोगों को क्या कहना चाहता हूं, यही कि यह दुनिया जिसमें हम रहते हैं, यह ख्याल की दुनिया है, मनोमय जगत् है, मायामय जगत् है। संकल्प की दुनिया है कि नहीं ? दाता लिखा करते थे 'जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति।' जो कुछ है तुम्हारा ख्याल है। हम लोगों को जो यह सुमिरन ध्यान, भजन दिया जाता है, किस लिए ? कि हमारे ख्याल में ताक़त आ जाय, हमारी Will power बढ़ जाय। मैस्मरेजम वाला जब सिखाता है क्या करता है ? दवार पर एक काला गोल निशान बना देता है और कहता है इसे देखते रहो। जब वह काला निशान उसको खूब नज़र आने लगता है तो उसके अन्दर

ताक़त आ जाती है। ऐसे ही हम को ध्यान दिया जाता है। जो शख्स ध्यान करके अपने गुरु या इष्ट की मूरत बना लेता है उसके कूवते इरादी बढ़ जाती है। मैं कोई बात रोचक और भयानक नहीं कहता, Scientifically बताता हूं। जिस तरह मैस्मरेजम वाले ने बाहर काले निशान को देख कर उस को ध्यान कर-करके चमेली के फूल की शक्ल में देखा वह असल तो काला ही रहा परन्तु उसके ख्याल ने उसको फूल बना दिया। तो जब हम ध्यान करके मूर्ति बना लेते हैं और वह मूर्ति बन जाती हैं तो क्या होता है ? हमारी Will power बढ़ जाती है फिर जो कुछ हम सोचते हैं वह मिल जाता है। मैं बाहर जाता हूं, कई दु:खिया मेरे पास आते हैं मैं कहता हूं अच्छा भई ध्यान किया करो। फिर जब जाता हूं "बाबा जी ! हमारा काम बन गया।" ध्यान बन गया ? हां जी, बन गया। कोई कहता है बाबा जी ! मेरा काम नहीं बना। ध्यान बना ? नहीं बना। भई ध्यान तेरा नहीं बना तो बाबा सिर मुंडाये। तुम लोग आये हो तुम को मैं गुर बताये देता हूं कि दुनिया की ख्वाहिशात को पूरा करने के लिए ध्यान किया

करो रोज़ सुबह व शाम। जब ध्यान में तुम्हारी मूर्ति बन जायेगी फिर क्या होगा ? तुम्हारी will power बढ़ जायेगी और जैसी तुम्हारी अपनी आशा होगी वह तुमको मिल जायेगी। मैं दुयिया को नाम नहीं देता। क्यों नहीं देता ? लोगों की वासनाएँ ग़लत होती हैं। एक आदमी कामी या चार सौ बीस करने वाला है, वह जब ध्यान करेगा तो उसकी काम वासना बढ़ जायेगी, उसकी चार सौ बीस बढ़ जायेगी। इस लिए यह नाम सब के लिए नहीं है। नाम का अधिकारी कौन है ? :—

विषयों से जो होय उदासा. परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहिं जा के, खोजत फिरे साध गुरु जागे।

नाम ऐसे आदमियों को मिलना चाहिए। आजकल हम गुरुओं ने जो आया नाम, जो आया नाम, ये नाम नहीं देते ज़हर देते हैं। पहले सत्संग कराना चाहिए उनको लाईन ऑफ् ऐक्शन बताना चाहिए कि कैसे जीना है। अगर एक आदमी गन्दा है बुरे ख्यालात रखता है अगर वह यह चाहता है कि मेरी बुराई चली जाय फिर वह अगर यह ध्यान

करेगा उसकी बुराई चली जायेगी। जिस आशा व विश्वास को ले कर तुम ध्यान करोगे वह तुम्हारी आशा पूरी होगी। यह मुझे तजुर्बा अपना भी है और सत्संगियों का भी है। मैं तो कहीं जाता नहीं, लोग मेरा ध्यान करते हैं उनके अन्दर मेरी मूरत बन जाती है। जिनकी मूरत बन जाती है उनके काम हो जाते हैं और वे समझते हैं बाबा फ़कीर करता है। कौन बाबा फ़कीर करता है, ऐ इन्सान! तेरा अपना ही विश्वास करता है। ऐ इन्सान! किस लिए लुटे जाते हो हम गुरुओं के आगे? दो किताबें हम पढ़ लेते हैं लेक्चर देते फिरते हैं देखो, सृष्टि में क्या कुछ हो रहा है। तुम्हारी दौलत तुम्हारे घर में है, सब चीज़ तुम्हारी खोपड़ी में है। बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है :—

घर में घर दिखलाय दे सो सत्तगुरु पुरुष सुजान।

जो तुमको तुम्हारे अन्तर ही सब कुछ यक़ीन करा दे उसका नाम मुरशद है। आपने समझा नहीं, बजाय इसके कि तुम मेरे आगे गिड़गिड़ाओ तुम ध्यान दे कर के मांगा करो, न मिले तो जहां मेरी

फोटो की इज्ज़त करते हो फिर जैसा चाहो सलूक करना। तुम्हारे पास है सब-कुछ किसी ने बाहर से नहीं देना। मैंने वही काम करना होता जो दूसरे महात्मा करते हैं तो मुझे नई दुकान खोलने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने यह दशा देखी कि हम भोलेभाले जीव लुट गये, किसी महात्मा ने साफ और सच्ची बात हमको नहीं बताई। पर महात्माओं का भी कोई क़सूर नहीं, दुनिया सच्चाई सुनने के लिए आती नहीं। दुनिया तो दुनिया की ख्वाहिशात के पीछे आती है। उनका इलाज मैंने बता दिया कि ख्वाहिश करो, वासना करो। अब रह गया यह कि अगर तुम्हारे ख्याल में ताक़त है तो मेरे ख्याल में भी ताक़त होनी चाहिए! तो मैं क्या करता हूं? मेरे पास दु:खी आते हैं मैं और कुछ नहीं करता, मैं आँखें बन्द करके कहता हूं दाता! इनका दु:ख दूर हो जाय, बस! इतना ही मैं करता हूं इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं करता। यह ठीक है मेरे पास दु:खों की भरी हुई चिट्ठियाँ आती हैं, लोग दु:खी मिलते हैं तो अब मैं क्या करूं? यही करता हूं, दाता! आपने काम दिया

था मेरी दाढ़ी की लाज आपके हाथ में है, मैं सच्चे दिल से चाहता हूं इसका दु:ख दूर हो जाय और जो विश्वास करते हैं उनका होता है । समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा ! तो आप लोगों को मैंने ध्यान की शक्ति के बारे में बता दिया । मेरे जिम्मे ड्यूटी है :—

- तो आया नर देही में धर फकीर का भेषा,
दुखी जीव को अंग लगा कर ले जा गुरु के देसा ।

तुम लोग मेरे जिस्म को पकड़ोगे तो मुझे मार डालोगे, गुरु का अंग उसकी वाणी है । मैं जो वचन कहता हूं उनको सुनो, उनको समझो ।

दूसरी बात यह है कि आजकल देखो दुनिया में क्या हो रहा है, यह क्यों है ? क्योंकि ज्यादातर तादाद में खुदरो औलाद पैदा हुई हुई है । खुदरो औलाद जानते हो न ! हम अपने स्वाद के लिए स्त्री, पुरुष मिलते हैं, बच्चा पेट में आ जाता है । हम खुद बेज़ब्त होते हैं फिर तुम कैसे उम्मीद करोगे कि वह जो बच्चा पैदा हुआ हुआ है वह तुम्हारा आज्ञाकारी होगा या कौम के लिए या मुल्क के लिए फायदेमन्द होगा । वह आउट ऑफ् कंट्रोल होगा यह मेरी जिन्दगी

की आज़माई हुई बात है। मैंने एक लड़का अच्छी सन्तान के भाव से पैदा किया। खुदगर्ज़ औलाद यद्यपि मेरी भी हुई मगर खुदा बड़ी दया की वह मर गई। आज मेरा लड़का तीन हज़ार रु. तन-ख्वाह लेता है, आप हैरान होंगे कि मुझको बचपन से लेकर आज दिन तक उसको ओय कहने का मौका नहीं मिला थप्पड़ मारना तो रहा दरकिनार। वह यहां कभी छुट्टी आता है मेरी रिक्शा है उस पर नहीं चढ़ता, कहता है पिता जी की रिक्शा है। मेरा नौकर है उसको मेज पर रोटी देता है, खा लेता है। बर्तन उठाता है तो उठाने नहीं देता कहता है आप मेरे पिता जी के आदमी हैं, आप मेरे जूठे बर्तनों को हाथ मत लगाओ।

ये मेरी अपनी जिन्दगी के तज़ुर्बात हैं, आपको अपना मुंह काला करके बताता हूं मेरी एक लड़की है उस वक्त मैं चाहता था और दाता दयाल को भी लिखा कि मेरे ऐसा बच्चा हो जो न कामी हो, न क्रोधी हो, न लोभी हो। वह एक लड़की पैदा हो गई, नीम उन्मत्त है उसमें वे सारी सिफ़तें है जो उस वक्त

मेरे ख्याल में मौजूद थीं। मैंने शादी भी की, पति ने नहीं बसाई। तो जैसा मां बाप का ख्याल होता है वह बच्चे को जाता है। ये औरतें बैठी हुई हैं, मैं इन ख्यालात को फैलाना चाहता हूं ताकि जो रूहानियत है उसके तो अधिकारी दुनिया में बहुत कम हैं, ये अपनी दुनिया की ज़िन्दगी बना लें। माताएँ औलाद को औलाद के भाव से पैदा करके क़ौम को बना सकती हैं, नेता नहीं बना सकते। यह एक।

दूसरे जब बच्चा पेट में होता है जिस किस मां के जज़बात होते हैं उनका असर बच्चे पर पड़ता है। अभिमन्यु का हाल आपने सुना होगा, अभिमन्यु जब पेट में था तो अर्जुन ने चक्रव्यूह बेधने का ज़िक्र पत्नी से किया। जब तक चक्रव्यूह बेधने का ज़िक्र था वह जागती थी, जब निकलने के वक्त का ज़िक्र आया वह सो गई। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह बेधा पर वह निकल न सका। अकबर बादशाह जब पेट में था, हुमायूं दुश्मन से डर का मारा जंगल में छुपा हुआ था।

उसकी बेगम नक्शा बना रही थी, पूछा क्या कर रही हो ? उसने कहा मैं चाहती हूं जो लड़का मेरे पैदा हो वह इतने मुल्क का बादशाह हो, वही हुआ। मेरा अपना केस देखो, मैं सिपाही का लड़का हूं। मेरे माँ बाप के यहां शादी के बाद बारह साल तक कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ। मैं पहला लड़का हूं। मेरी माता मुझे कहा करती थी बच्चा! मैं स्टेशन पर देखती थी, स्टेशन मास्टर झंडियाँ हिलाते हैं, D.T.S. की गाड़ी कटती है। मैं भी सोचा करती थी मेरे भी कोई बच्चा हो वह स्टेशन मास्टर बने। उसका नतीजा यह निकला मैं स्टेशन मास्टर हो गया, मेरा छोटा भाई राय साहिब, ट्रैफिक मैनेजर ऑफ् द रेलवेज़ हो गया, उसकी गाड़ी कटती थी। तुम माताएँ आई हो तुम्हारे लिए मैं सबक देता हूं, सोचो मैं क्या कह रहा हूं।

देखो! जब मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता था तो मैंने एक हवलदार के लड़के की कलम और दवात चुराई। मेरा बाप सिपाही था, उस हवलदार ने मेरे पिता को कहा, मेरे पिता ने मुझे थप्पड़ मारे,

अब मैं सोचता हूं मुझे किसने सिखाया था कि चोरी कर। कोई सिखाता तो नहीं, क्यों की ? क्यों कि मेरी मां चोर थी। बच्चा ! तेरा बाप बाहर से पैसे लाता था। पहरा-शहरा देते थे न ! तो मुफ्त के पैसे आ जाते थे तनख्वाह के अलावा। तुम उनकी जेब से पैसे निकाल लिया करती थी तो मां ! क्या करती थी ? जमा करती थी। फिर ? एक बार तेरा बाप बीमार हो गया हस्पताल ले चले, बोल नहीं सकता था, इशारा किया कि पैसा नहीं है तो मैंने बच्चा ! चालीस रु. जमा किये हुए थे वांसली उसकी कमर में बांध दी। मैं उसके पेट में था तो फिर मैंने दूसरी कक्षा में चोरी की तो कौन सा जुर्म किया ? अगर आप की औलाद खराब है तो आप खुद खराब हैं। अगर हम को शिकायत है अपनी औलाद से तो हमारा अपना दोष है। आप सोचो मेरी बात को, यह मैं आपको दुनिया की बातें बता रहा हूं। अगर आप दुनिया में सुख चाहते हो तो प्रवृत्तिमार्ग में आओ, ख्याल की दुनिया को देखो। 'जैसी आशा वैसी बासा, जैसी करनी वैसी भरनी।'

तीसरी बात जो मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि बच्चे पेट में होते हैं पांचवाँ, छवाँ, आठवाँ महीना होता है स्त्री, पुरुष भोग करते हैं, मां कामातुर होती है। यदि अभिमन्यु बात सुन के सीख सकता है तो जब मां कामातुर होती है, बच्चा पेट में है तो उसका असर उस पर क्यों न जायेगा! जायेगा कि नहीं जायेगा? नतीज़ा क्या होगा? आजकल नौजवान लड़के देखो न! शादियों से पहले कोई हाथरसी करता है, कोई लड़कियाँ चपटी खेल कर अपने Character को Loose कर जाती हैं, इसमें कसूर किसका है, बच्चों का? नहीं, मां बाप का कसूर है। आजकल के हिन्दू नौजवान जनसघ वाले इत्यादि कहते हैं पुरानी संस्कृति, पुरानी संस्कृति, पुरानी सम्कृति। अरे दीवानो! मनु सब से आद्य ऋषि हुआ है, उसने सन्तान उत्पन्न करने के तरीक़े बताये हुए हैं। कौन उन पर चलता है? नाम ही नाम धर्म का लेते हैं न! सोचो मेरी बात को!! इस सत्संग में मैं आपको सब कुछ कह जाना चाहता हूं, आप अमल करें या न करें, मेरे जिम्मे ड्यूटी है। फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना, सो मैं दुनिया

के लिए भी और परमार्थ के लिए भी शिक्षा को बदले जा रहा हूं। वह शिक्षा क्या है ? जिन आदमियों का छोटी उम्र में ब्रह्मचर्य गिर जाता है वे अशान्त हैं। मैं जानता हूं कि उनकी अशान्ति का कारण क्या है। 70 प्रतिशत वे अशान्त नौजवान हैं जिनके ब्रह्मचर्य गिर जाते हैं, किसी को स्वप्नदोष होता है, किसी का वीर्य गिरा हुआ होता है और कोई ग़लत काम करता है। कोई लाख कोशिश करे अगर अशान्ति उनके हिस्से में न आये तो किनके हिस्से में आये !

चौथी बात गृहस्थियों के लिए यह है कि हम हिन्दू हैं। राधास्वामीमत में स्वामी जी ने साफ लिखा है :—

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

सनातन धर्म कहता है :—

कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस कीन्ह तस फल चाखा।

कबीर साहिब कहते हैं :—

करम गति टारे नाहिं टरी।

[शेष क्रमशः]

सत्संग, परम सन्त मानव दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

दिनांक 18-4-82

रूहानियत (आध्यात्मिकता), अनुमान और अनुभव

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:,
गुरु: साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:।

मस्तरामसुतं देवं फ़कीरचन्दं पण्डितम्,
परमसन्त दयालुं च फ़कीरं बन्दे जगद्गुरुम्।
मानवधर्मस्य दातारं दाता दयालस्य प्रियम्,
सन्तधर्मस्य गोप्तारं फ़कीरं बन्दे जगद्गुरुम्।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत् किंचिज् जगत्यां जगत्,
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्यस्विद् धनम्।

पहले तो गुरु को नमस्कार किया है जैसे लोग करते हैं वह गुरु जो उत्पन्न करने वाली शक्ति अर्थात्

ब्रह्मा का रूप है, वह गुरु जो पालन करने वाली शक्ति का भी रूप हैं और वह गुरु जो संहार करने वाली शक्ति अर्थात् माया को नाश करने वाली और ज्ञान देने वाली शक्ति शंकर या शिव का रूप हैं और वह गुरु जो इन तीनों से परे परम तत्त्व का रूप हैं उन को नमस्कार है ।

पण्डित मस्तराम जी के घर में शारीरिक रूप से उत्पन्न परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज जो जगत् के गुरु हैं उनको नमस्कार है । वह मानव धर्म जो आदि धर्म है और जिसके कई नाम बदले हैं उसके आधार हैं वह हमारे परम गुरु महर्षि दाता दयाल जी महाराज के सबसे प्रिय शिष्य हुए और जिन्होंने सन्त धर्म की रक्षा की है ऐसे जगत् के गुरु को नमस्कार है ।

अन्तिम श्लोक या मन्त्र जो मैंने पढ़ा उसका अर्थ यह है कि जिस जगत् के वह गुरु हैं वह जगत् क्या है ? अर्थात् जगत् जिसको काल और माया का प्रतिबिम्ब या छाया मानते हैं, जिसके अन्तर जो कुछ भी

चल, अचल, जड़ या चेतन द्रव्य हैं ये सब कुछ क्या हैं ? इस सम्बन्ध में उपनिषद् के ब्रह्मर्षि जिन्होंने परम तत्त्व का अनुभव कर लिया है वे लिखते हैं कि यह सब कुछ उसी परम तत्त्व में ओत-प्रोत हैं या यूं कहो कि उसी परम तत्त्व की जो बूंद है वह इतनी व्यापक, इतनी फैली हुई है कि किसी वस्तु के अन्दर भी हम नहीं कह सकते कि वह न हो। जब सब चीजों में उसको ही बताते हैं तो उपनिषद् बताता है कि हमें क्या करना चाहिए ? हम अपने जीवन को कैसे व्यतीत करें ? जैसे परम दयाल जी महाराज ने बताया कि उस में अपना लगाव या मोह न रखते हुए आनन्द से भोगो, यह नहीं कि यहाँ से भाग जाओ। कर्मानुसार आपको जो कुछ मिलता है उसको भोगो परन्तु उसमें फँसो नहीं। भोगते व न फँसते हुए किसी दूसरे के भाग व सम्पत्ति को लालच की दृष्टि से देखकर उसका प्रयोग मत करो इसी में सारा मानवधर्म है। महर्षि दाता दयाल जी महाराज का शब्द है :—

तू घट का मेरे बासी बने, तेरा ही मन में ध्यान रहे,
तेरा ही सुमिरन भजन हो नित, तेरा ही नित अनुमान रहे।

तू कौन है क्या है, क्योंकर है इसकी नहीं मुझे समझ आई,
आँखों को मिले दर्शन तेरा, बस यही बात प्रमाण रहे।

महर्षि दाता दयाल जी महाराज ने यह गुरु के प्रति लिखा है, सारे धर्मों और राधास्वामीमत या सन्तमत का निचोड़ इसी शब्द में आ गया है। घट क्या है ? घट का अर्थ हृदय है और घड़ा भी होता है। दो शब्द प्रयोग में आते हैं घटाकाश और आकाश। आकाश सब जगह फैला हुआ है और घड़े में भी आकाश है उदाहरण दिया जाता है कि जब घड़ा टूट जाता है तो वह आकाश में मिल जाता है इसी प्रकार जब तक हम घट अर्थात् शरीर, मन और अहं (चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार) की सीमा में हैं तब तक हम अज्ञान में हैं। इस घट को तोड़ ने केलिए जब हमारा ध्यान या सुरत मालिक या गुरु की ओर लग जायेगी तभी हम मोक्ष को प्राप्त होंगे महर्षि दाता दयाल जी महाराज कहते हैं :—

तू घट का मेरे बासी बने, तेरा ही मन में ध्यान रहे।

यहां सुमरिन, ध्यान की बात कही है कि है तो वह मेरे घट का वासी परन्तु मुझे मालूम नहीं है इस लिए

उसको वासी बनाने के लिए सुमिरन, ध्यान की जरूरत है अर्थात् उसकी याद की आवश्यकता है :—

'तेरा ही सूमिरन भजन हो नित, तेरा ही नित अनुमान रहे ।

यह बात समझने की है । हर समय हमारे मन व भाव में उसी मालिक के नाम का सुमिरन रहना चाहिए और अनुमान में भी अर्थात् सोते-जागते, उठते-बैठते जब हम कोई भी काम कर रहे हों हमारे चिन्तन और विचारों में सुरत की धार जब ऊपर लगी हुई होगी तब हमारा जीवन बनेगा। वह कौन सा काम है जिसको करते हुए हम मालिक के साथ नहीं रह सकते ! इस लिए किसी भी मनुष्य के व्यवसाय को हमें नीचा नहीं समझना चाहिए चाहे कोई भंगी या चमार का काम करता है, व्यापार का काम करता है या क्लर्क या प्रोफैसर है, ये सभी ऊँचे उठ सकते हैं । जब काम करते हुए हमारा ध्यान पंजाबी की कहावत के अनुसार 'ਹੱਥ ਕਾਰ ਵੱਲ ਦਿੱਲ ਯਾਰ ਵੱਲ' लगा रहता है तो वह काम भी फिर क्यों नहीं सफल होगा विशेषत: इस मन्दिर का काम जहां मालिक हर समय मौजूद है । ध्यान या सुरत शब्द पर लगे रहने से सब

काम पवित्र हो जायेंगे तथा बड़े आनन्द से होंगे।

अनुमान का अर्थ है अन्दाज़ा लगाना या विचार करना। जब हम विचार करते हैं उसको अनुमान कहते हैं। इस अनुमान शब्द को समझाने के लिए दर्शनशास्त्र का एक उदाहरण देता हूं कि कहीं दूर आपको धूआँ नज़र आ रहा है। धूआँ नज़र आया तो आपने कह दिया यहां आग लगी हुई है। यह कैसे कहा? अपने पिछले अनुभवों के आधार पर कहा क्योंकि जहां आग होती है वहां धूआँ होता है, यहां धूआँ है इस लिए आग है, इसको अनुमान कहते हैं। अनुमान लगाना बुद्धि का प्रयोग करना है। तो जिस काम में अनुमान लगा रहे हैं उस काम में भी मेरे मालिक का ध्यान रहे :—

कौन है क्या है क्यों कर है इसकी मुझे नहीं समझ आई।

यह प्रश्न कौन करता है कि तू कौन है, क्या है? अरे! जिसको विश्वास नहीं होता। अंग्रेजी में कहते हैं कि Love begets love & doubt begets doubts अर्थात् प्रेम करोगे प्रेम मिलेगा सन्देह करोगे सन्देह मिलेगा। घरों में पति-पत्नी में गड़गड़ क्यों होती है? जब कोई किसी पर सन्देह करने लगा कि

मेरा पति आज देर से घर आया, क्या बात है ? उसने सन्देह किया तो फिर विचार की शक्ति है, दूसरा भी सन्देह करेगा। कोई कहने की आवश्यकता नहीं। आपको बिना कहे पता चल जायेगा कि वह आपके बारे में क्या सोच रहा है। सारांश यह है कि विश्वास से विश्वास पैदा होता है और प्रेम से प्रेम पैदा होता है। इस तरीक़े से ही हम जीवन में भी लाभ उठा सकते हैं और जीवन में इस प्रकार लाभ उठाते हुए परमार्थ के लिए भी जो हम साधन करते हैं वह भी साथ-2 बनता जायेगा :—

आँखों को मिले दर्शन तेरा बस यही बात प्रमाण रहे।

नारायण दास जी ! जब सब सौंप दिया तो फिर और किसी चीज़ के देखने की आवश्यकता ही नहीं है :—

सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।

वास्तव में बात यह है कि वह मालिक हर समय आपकी रक्षा कर रहा है और आपको पता ही नहीं है। केवल थोड़ा विश्वास कम है, जब पूर्ण रूप से

शरणागत हो जाते हैं तो फिर किसी और बात के सोचने की आवश्यकता नहीं है। प्रमाण वे व्यक्ति मानते हैं जिनको सन्देह होता है । जब शरणागत हो गये तो वह है, जो है वह मिल जायेगा । मुझे इस प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। जब मैं जानता हूं कि वह मालिक मेरे साथ है तो मैं उसके लिए प्रमाण की दलीलें क्यों देता फिरूँ। दलीलें नीचे की चीज है। जब हम मालिक से प्यार कर रहे हैं तथा मालिक का ध्यान कर रहे हैं तो यह पूछने की आवश्यकता कि वह कौन है तथा कैसा है, प्रमाण दे ही क्या सकते हैं ।

यूं तो लोग 'ईश्वर है या नहीं' इस पर बड़े-2 प्रमाण देते हैं फिर उस प्रमाण को काटते हैं। बुद्धि की आवश्यकता होती है लेकिन जिस बुद्धि में प्रेम नहीं होता वह बुद्धि बहुत दूर ले जाती है। बड़े-2 प्रमाण हैं, मैं केवल एक आध प्रमाण बता देता हूं। एक दार्शनिक कहता है कि ईश्वर है, देखो ! प्रत्येक वस्तु का कारण होता है जैसे यह लाऊडस्पीकर है, यह किस चीज़ से बना हुआ है ? यह लोहे का है।

लोहे का कारण क्या है ? लोहा एक धातु है। धातु सख्त होती है, उसके टुकड़े-2 करें तो आखिर इसके परमाणु हो जायेंगे। तो परमाणु उसका कारण हो गया। परमाणु क्या हैं ? परमाणु के अन्तर इलेक्ट्रोन्स् घूमते रहते हैं जो एक शक्ति है। यह शक्ति यहां भी है, सूर्य में भी है, ब्रह्माण्ड में भी है, यह शक्ति प्रत्येक स्थान पर है। यह शक्ति क्या है ? इस शक्ति या प्रकृति के अन्तर सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण गुण हैं। यह प्रकृति काम कैसे करती है ? इसके पीछे कोई और वस्तु है, कुछ है, ब्रह्म है, पुरुष है, कुछ कह दो, वह जो वस्तु है, जो कुछ भी है वह मालिक है। वे यह प्रमाण देते हैं।

हमारे पुराने शास्त्रों ने भी प्रमाण दिया है। यह प्रमाण आपके विश्वास को कि मालिक है दृढ़ करने के लिए होता है परन्तु जो प्रमाण मेरे मालिक ने दिया है किसी ने भी नहीं दिया। और इतना दिया की मुझे किसी दूसरे प्रणमा की आवश्यकता नहीं है। मालिक ने मुझे पूरा बता दिया जिससे मेरी शंका दूर हो चुकी है। मेरे मालिक ने जो

प्रमाण दिया है वह बहुत अगम है, मैं इस पर कई किताबें लिखूंगा। मालिक ने मुझे कई पत्रों में लिखा है कि you will do great work अर्थात् तुम महान् काम करोगे। मैं आपको यह प्रमाण देने की इच्छा से नहीं कह रहा, मुझे प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने जो प्रमाण दिया है वह सब धर्मों को मिलाने वाला तथा सारे संसार को शान्ति देने वाला है और शान्ति देगा। इतना बड़ा काम करना है ऐ सत्संगियो ! मालिक ने जो मेरे ज़िम्मे लगाया है। मैं इसकी बाबत बाद मैं कहूंगा।

आजकल लोग वैज्ञानिक प्रमाण देते हैं। विज्ञान आध्यात्मिकता के आगे कुछ भी नहीं। यह इनके चरणों की धूल के नीचे है। हमारी पढ़ाई, लिखाई क्या है ? कुछ नहीं। Ph. D. कर लो D Litt कर लो वह कदमों की धूल के कणों से भी कम है। प्रमाण रोचक और भयानक होते हैं। रोचक से फिर यथार्थ पर आना पड़ता है। साधारणतय वैज्ञानिक एक यह प्रणाम देते हैं कि जहां पर कोई सुन्दरता होती है जैसे यहां ये तस्वीरें एक ढग से, एक क्रम

या एक order में लगी हुई हैं। तो जहां पर वह क्रम या सुन्दरता होती है उस क्रम को किसी बुद्धि के द्वारा ही किया गया। जिसने इन तस्वीरों को लगाया है वह कोई बुद्धिमान् ही होगा। उसके पीछे बुद्धि होगी, ज्ञान होगा। फिर आप सारे ब्रह्माण्ड में कण-कण से लेकर सौर मण्डल और अनेक मण्डलों को देखें। महाराज जी अक्सर कहा करते थे 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'। जो कुछ भी हमारे पिण्ड में है वही सारे ब्रह्माण्ड में है। कैसे ? आपको एक उदाहरण देता हूं। माद्दे का छोटे से छोटा कण, अणु या जो परमाणु होता है उसमें एक केन्द्र होता है जिसे न्यूक्लिस कहते हैं। इसके चारों ओर इलैक्ट्रोन्स् घूमते हैं। किसी परमाणु के अन्तर कम तथा किसी के अन्तर अधिक इलैक्ट्रोन्स् होते हैं। हाईड्रोजन बल्ब में शायद एक ही होता है। कोई भी एक अणु या परमाणु ले लो उसका एक केन्द्र होगा उसके चारों तरफ इलैक्ट्रोन्स् घूम रहे होंगे इसी सिद्धान्त को समझ कर उन्होंने अणु शक्ति का आविष्कार किया। अणु से आप हमारे सौर-मण्डल की ओर चले, सूर्य है जिसके चारों ओर

पृथ्वी घूमती है और दूसरे शनि, वृहस्पति इत्यादि जितने ये ग्रह हैं वे भी चक्कर लगा रहे हैं और छोटे से छोटे परमाणु में भी वही का वही नक्शा तथा वही की वही तस्वीर है। क्या यह ऐसे ही हो गया कि छोटे अणु में भी वही बात तथा वही नक्शा हो और हमारे सौर-मण्डल में भी तथा हमारे शरीर में भी वही नक्शा हो। इससे सिद्ध होता है कि इसके पीछे इसके चलने वाली जो भी शक्ति है वह शक्ति बड़ी बुद्धि वाली शक्ति होगी और वह चेतन शक्ति होगी।

अब तक मैंने आपको भौतिक अर्थात् जड़ वस्तु की बात कही और अब चेतन को देखो ! हमारा यह जो जीवित शरीर है इसमें अनेक कीटाणु या जीवाणु हैं। अगर शरीर में थोड़ा सा भी कहीं जख्म हो जाये खून चलता है तो शरीर के जितने अन्य कीटाणु हैं वे शीघ्र जख्म को ठीक कर देते हैं तथा खून बन्द हो जाता है। मैंने एक और बड़ी विचित्र बात सुनी कि जब व्यक्ति बीमार हो जाता है, किसी को बुखार होता है, फिर बुखार उतर जाता है तथा व्यक्ति

स्वस्थ हो जाता है। इन अवस्थाओं की विज्ञान वालों ने फिल्में ली हैं और देखा कि हमारे अन्तर खून के लाल कार्प्सल्स्, जीवाणुओं और कीटाणुओं की खूब लड़ाई होती है। फिल्म की तस्वीर बताती है कि जब लड़ाई होती है तो हमारे खून के कार्प्सल्स् तीन भागों में विभक्त हो जाते हैं तथा उनकी तीन सेनाएँ बन जाती हैं। क्यों? पहली सेना तो कीटाणुओं व जर्म्स् से लड़ती है। बहुत से जीवाणु व कीटाणु मर जाते हैं। फिर जो दूसरी फौज खड़ी होती है वह जोर से लड़ने लगती है तो बुखार और तेज हो जाता है। वह लड़ती है तथा सब कीटाणुओं को मार देती है। वह फौज थक गई इसी कारण बुखार के बाद कमज़ोरी आती है फिर तीसरी Reserve फौज आगे आती है और वे जो मरे हुए कीटाणु व जर्म्स् हैं उनको खाती जाती है अरे! ऐसा लगता है कि इस फौज को चलाने वाला सेनापति इसके पीछे बैठा है। वह सेनापति वह तत्व या परम तत्व का रूप उनके अन्तर है तथा हमारे शरीर में ब्रह्माण्ड में तथा कण-2 में है, इससे यह प्रमाणित होता है। प्रमाण

तो अच्छा है लेकिन यह बुद्धि का प्रमाण है। महर्षि दाता दयाल जी महाराज कहते हैं :—

आंखों को मिले दर्शन तेरा, बस यही बात प्रमाण रहे।

मैंने आपको जो प्रमाण बताये हैं ये बुद्धि से पढ़-2कर लिखे हुए हैं, यह कुछ भी नहीं है। इन परमाणुओं की क्या आवश्यकता है जब मैं उस मालिक को याद कर रहा हूं वही सच्चा प्रमाण है :—

अव्यापक सर्वव्यापक है, गुण अगुण सगुण सब कुछ भी है।

ये सब झगड़े उन लोगों के हैं जिन्होंने अनुभव नहीं किया। वह सर्वव्यापक भी है इस संसार से परे भी है, गुण भी है, सगुण भी है, निर्गुण भी है। यह झगड़ा उन लोगों का है जो केवल सोच-विचार की सीमा तक है। वैसे देखा जाये, वह मालिक सर्वाधार, उसे निर्गुण कह दो, जब गुणों वाला संसार जो हमारे सामने है उससे निकला है तो यदि उस में गुण नहीं होते तो यह कैसे निकलता ? निर्गुण का

अर्थ यह नहीं है। यदि आप कहें कि यह तो नाशवान् है तो यदि मालिक नाशवान् है तो फिर वह सदैव रहने वाला कैसे हुआ ? वास्तव में दोनों बातें ठीक हैं। जो वस्तु हमें दिखाई देती है, जो सीमित है, वह असीम से निकला है। जो हदी है वह बेहदी से निकली है। हदी भी है बेहदी भी है निर्गुण भी है, सगुण भी है, जो है सो है।

वेदान्तियों में भी झगड़ा है। दो प्रकार के वेदान्त हैं दाता दयाल ने इस पर खूब लिखा है। एक वेदान्त है अद्वैत वेदान्त, दूसरा है विशिष्टाद्वैत वेदान्त। अद्वैत वेदान्त शंकराचार्य जी का है। शंकराचार्य कहते हैं कि भई ! क़ादिर-ए-मुतलिक़ हमारी एक जात है, हम इससे निकले हैं। वास्तव में हम उससे एक हैं तथा हमें उसमें मिल जाना तथा उससे एक ही हो जाना चाहिए। उनके विचार से मुक्ति क्या है ? उनके विचार से मुक्ति तब मिलती है जब आपने मालिक का ध्यान किया, समाधि में पहुंच गये तथा सब स्टेजों से गुज़रे सहस्रदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा, सत्तलोक, सतपुरुष, और अलख

अनामी में पहुंचे और आखिर में जब आप बिलकुल खो जाते हैं आपकी हस्ती नहीं रहती अर्थात् आप एक हो जाते हैं। जिसको वह कहते हैं कि गुम हो गये। गुम शब्द भी ग़लत है। वह कहते हैं कि हमारा व्यक्तित्व या हमारा अपना अलग रहना बिलकुल समाप्त हो जाता है, कुछ नहीं रह जाता और विशिष्टाद्वैत वाले कहते हैं कि जब मालिक मिलता है तो क्या होता है। हम अलग तो रहते हैं, सारूप भी हो जाते हैं, जैसा मालिक का रूप है वैसा हमारा रूप हो जाता है परन्तु पूर्ण रूप से मालिक नहीं बनते, हम अलग रहते हैं। अब झगड़ा यह है कि क्या अलग रहते हैं या मिल जाते हैं ? इस झगड़े के लिए वह एक दूसरे पर आलोचना करते हैं, कटाक्ष करते व आरोप लगाते हैं। अद्वैत वेदान्त वाले कहते हैं भई ! तुम तो मालिक को शहद की मक्खियों का एक छत्ता समझते हो। तुम जो कहते हो कि हम अलग हैं तो जब आप शहद को चखने के लिए जाते हो तो छत्ते के चारों तरफ घूमते रहते हो, तुम में इतना साहस नहीं कि उसके ऊपर बैठ जओ। और विशिष्टाद्वैत वाले कहते हैं कि तुम जो कहते हो

कि मिल जाते हैं तो तुम तो ऐसी मक्खी हो जो शहद को चखने जाती है और वहां ही फँस जाती है। अभी यह सब सिद्धान्त की बातें हैं। सन्त इससे ऊपर उठे हुए हैं इस लिए सन्तमत अच्छा है। परम दयाल जी महाराज कहते हैं कि भई! तुम यह क्या झगड़ा करते हो? जब मैं वहां पर जाता हूं तो वहां पर मुझे यह होश नहीं होता कि मैं हूं, और यह भी नहीं होता कि मैं न हूं, नहीं हूं भी नहीं है। क्योंकि मैं वहां से वापिस आ जाता हूं इस लिए यह प्रमाणित हो गया कि मैं खत्म नहीं हो गया था, अनुभव से दोनों वेदान्तियों को ग़लत प्रमाणित कर दिया।

जब यह अनुभव हो जाता है तो पर्दा खुल जाता है। मैं आपको सत्य कह रहा हूं कि मेरा यह पर्दा खुल गया। मैंने अनुभव किया है इस लिए बड़े-बड़े दार्शनिक या विद्वान् हों जिनको कोई सन्देह हो उनको मेरे पास लाओ मैं अहंकार नहीं करता, मालिक की कृपा से मैं उनका सन्देह दूर कर सकता हूं। एक मामूली भक्त था, जो बहुत पढ़ा लिखा भी नहीं था उसने

कहा-शर्मा जी ! देखो !! मैं दिन-रात मालिक का ध्यान कर रहा हूं जब मालिक मेरे सामने प्रकट हो जाता है, सत्तपुरुष हो, अलख हो, अनामी हो या राधास्वामी हो, जब वह प्रकट हो जाता है तो उस समय वह कहता है, ऐ प्यारे ! यदि तू चाहे तो मेरे में मिल जा नहीं तो यहीं अलग खड़ा रह. अरे ! क्या मालिक मुझे इतनी भी आजादी नहीं देगा? क्या झगड़ा है कि सगुण है, निर्गुण है, बीच में मिलते हैं, अलग रहते हैं, ये सब कहने की बात है। यह है हमारा मानव धर्म या असली सन्तमत और असली सत्य सनातन धर्म जो सब धर्मों को बताता है कि आओ, तुम्हारी जो शंका है मैं उसे दूर कर दूं।

मासिक सन्देश

प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी परम दयाल जी सहाय !

मालिके कुल के अवतार परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद पहला बार उनकी शारीरिक ग़ैरहाज़री में 13 और 14 अप्रैल 1982 को वैसाखी का उत्सव मनाया गया। सत्संगियों ने बहुत प्रेम और श्रद्धा से आचार्यों और सन्तों के सत्संग से लाभ उठाया। क्योंकि इन सत्संगों का उद्देश्य परम दयाल जी के उपदेशों और असूलों पर रोशनी डालना और यह बतलाना था कि उनके महान् कार्य से सन्तमत को क्या लाभ पहुंचा है, इस लिए मैं इस विषय पर ही कुछ कहना चाहूंगा।

परम दयाल जी महाराज ने लोक और परलोक दोनों पहलुओं को जीवन में सफल बनाने पर लगातार जोर दिया है। उन्होंने एक बार कहा था कि लोक

और परलोक मनुष्य जीवन के दोनों पहलु घुडसवार की दो रकाबें हैं। जो मनुष्य इन दोनों पहलुओं को ध्यान में रखता है और इन में से किसी एक पर ही ज़रुरत से ज्यादा ज़ोर नहीं देता, वह अपने जीवन को सफल और सुखी बना सकता है और अन्त में उसे शान्ति भी मिल सकती है। जिस मनुष्य ने इस लोक की ज़िन्दगी को सच्चाई और नेकनीयती पर चल कर नहीं बनाया, वह न तो इस सुख-दुख के लोक में सफल हो सकता है और न ही उस परम तत्त्व की तरफ क़दम बढ़ा सकता है, जिसको पा लेने से मनुष्य सुख-दुःख, लाभ-हानि, पुण्य-पाप और राग-द्वेष से ऊपर उठ कर अपनी ज़ात में मिल जाता है। इसी उद्देश्य पर पहूंचने के लिए ही आत्मा मनुष्य के चोले में आती है।

असल में मनुष्य अपने आप में पूर्ण है, किन्तु वह अपने जन्म-जन्म के कर्मों के असर से अपनी पूर्णता को भूल चुका है। उसकी अन्दर की ज्योति अज्ञान के कारण ढकी हुई है। जब तक ये कर्म कट नहीं जाते मनुष्य जीवन में उस अवस्था को नहीं पा सकता,

जिसे जीवन्मुक्ति कहा जाता है इसी अवस्था का नाम ही निर्वाण पद, चौथा पद, परम पद आदि है। सच्चा गुरु अपने अनुभव के आधार पर इन कर्मों को काटने के लिए ज्ञान या विवेक देता है। सुमिरन, ध्यान और भजन मन को इकट्ठा करने में सहायता देते हैं। जब मन इकट्ठा हो जाता है यानि चित्त की वृत्तियां स्थिर हो जाती हैं, तो मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है।

जीवन्मुक्त की क्या निशानियाँ है ? जीवन्मुक्त किसी से वैर भाव नहीं रखता। उसका प्रेम सच्चा, पवित्र और बिना किसी ज़ाती ग़रज के होता है। उसमें से दया और प्रेम की धारा लगातार बहती रहती है। जो भी मनुष्य उसके नज़दीक आता है, उसे शरीर का आराम, मन का सुख और आत्मा की शान्ति मिलती है।

सन्तमत में जीवित गुरु की महिमा इस लिए है कि गुरु स्वय जीवन्मुक्त हो कर सत्संगियों को जीवन्मुक्त बनने का ज्ञान देता है इस लिए ही बार-२कहा गया है, "सद्गुरु खोजो री प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।"

जब मनुष्य को ऐसा गुरु मिल जाता है, तो वह रूहानियत में उन्नति कर सकता है। जीवित गुरु ऐसा होना चाहिए जिसकी अपनी सभी शंकाएँ समाप्त हो चुकी हों और जिसे यह ज्ञान हो चुका हो कि शरीर, मन और आत्मा में जो अनुभव होते हैं, वे सभी चौथे पद पर पहुंचने की सीढ़ियां हैं। चौथा पद सबसे न्यारा है। लेकिन आप लोग तो चौथा पद पाने के लिए सत्संग में नहीं आते और न ही सभी सत्संगी चौथे पद के पाने के अभी अधिकारी हैं। इसका कारण उनके पिछले जन्मों के कर्मों का बोझ है। बार-2 कामिल पुरुष का सत्संग सुनने से और उस पर अमल करने से यह बोझ धीरे-२ हल्का होता जाता है। परम दयाल जी महाराज ने कहा है कि गुरु की आज्ञा पर चलने से अच्छे और बुरे दोनों कर्म स्वप्न में भी कट सकते हैं। इसलिए परम दयाल जी महाराज ने जिस-२ शिष्य को जो-२ काम सौंपा है और जो-२ आदेश दिया है, उस पर चलने से उनके कर्म इसी जन्म में कट सकते हैं और सब जीते जी जीवन्मुक्त बन सकते हैं। जो आदमी गुरु की आज्ञा का

पालन नहीं करता उसे कृतघ्न कहते है और कृतघ्नता का पाप सबसे बड़ा पाप है इस लिए कहा गया है:—

"कामी तरे, क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त,
आन उपासक कृतघ्न तरे तरे न नाम रटन्त।"

इस लिए मैं अपने सत्संगों में महाराज परम दयाल जी की आज्ञा के अनुसार सच्चाई और प्रेम की धारा बहाने की कोशिश करता रहता हूं। मैं अपने परम गुरु की इस आज्ञा का पालन करने पर मजबूर हूं। एक तो मैं अपने पिछले जन्मों के कारण कुदरत से इस काम को करने के लिए घड़ा गया हूं और दूसरा मेरे परम गुरु ने बार-२ अपनी वसीयत लिखने से पहले और बाद मुझे चेताया है कि मैं खास उद्देश्य के लिए मानव के चोले में आया हूं और उसे पूरा करने के लिए ही कुदरत ने मुझे परम दयाल जी महाराज के साथ जोड़ा है और इस काम करने से ही मैं जीवन्मुक्त हो जाऊंगा।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि मैं परम दयाल जी महाराज की आज्ञा का पालन करते हुए स्थायी रूप से मानवता मन्दिर में आ गया हूं और उनकी जगह पर मैंने सारा काम सम्भाल लिया है। सब

सत्संगियों और सब केन्द्रों और उनके आचार्यों को जो-2 आशा परम दयाल जी महाराज से थी, वह हमेशा के लिए मुझ से कर सकते हैं। मानवता मन्दिर में और उसके बाहर जो-2 आचार्य और गुरु परम दयाल जी के आदेश से सत्संग करा रहे हैं या नाम दान दे रहे हैं उनका मैं वैसे ही मार्ग दर्शन करता रहूंगा जैसा कि परम दयाल जी कर रहे थे।

मैंने पहले भी एक बार बताया था कि महाराज परम दयाल जी के पिछले 15 वर्षों के पत्र मुझे मिल नहीं रहे क्योंकि मैं कभी अमेरिका में रहा तो कभी भारत में। सौभाग्यवश पिछले दो सालों से जो पत्र सम्भाल कर रखे थे उनका हवाला पहले दे दिया गया था। कल मुझे मानवता मन्दिर की फाईल में महाराज जी का 1968 का एक प्रेरणा देने वाला प्यार से भरा महत्वपूर्ण पत्र मिला है और साथ में उनको मेरा दिया गया जवाब भी। मैं उन दोनों पत्रों को आपको पेश कर रहा हूं। सब को मेरा राधास्वामी। परम दयाल जी महाराज की कृपा सदा आप पर बनी रहे।

आपका मानव

निम्नलिखित रैजोल्यूशन फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट (रजिस्टर्ड) की ओर से विचार विमर्श के अनन्तर सर्वसम्मति से पास किया गया।

मालिके कुल परम तत्त्व आधार श्री हजूर परम सन्त पूर्ण धनी परम पुरुष परम दयाल जी महाराज के परम धाम सिधारने के पश्चात् तथा उनके जीवन काल में ही अपना निजी उत्तराधिकारी बनाने हेतु उनका वसीयतनामा दिनांक 20-4-1980 के अनुसार फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट (रजिस्टर्ड) का पूर्ण, अन्तिम तथा संयुक्त निर्णय: हजूर परम दयाल जी महाराज अपना निजी एक मात्र उत्तराधिकारी परम सन्त श्री हजूर मानव दयाल जी (Dr. I. C. Sharma) जी महाराज को नियुक्त कर गये हैं। वही हजूर महाराज जी के स्थान पर जो परम दयाल जी महाराज अपने जीवन काल में निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता भव सागर से पार करने तथा उत्साह देने हेतु कर गये, वही कार्य करेंगे। हम सभी सदस्यों का उन पर पूर्ण विश्वास है और हम उन्हीं को ही उनकी जगह उनका ही रूप मानते हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में काम करने वाले महात्मा, गुरु व आचार्य सभी उनकी अनुमति के अनुसार काम करेंगे। होशियारपुर के बाहर जितने केन्द्र परम दयाल जी महाराज से सम्बन्धित हैं उनके संस्थापक और आचार्य उसी प्रकार से मानव दयाल जी से सीधा सम्पर्क रखें जैसा कि वे परम दयाल जी से रखते थे। इस रैजोल्यूशन को ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने मानव मन्दिर में छपवाने का निर्णय तथा अनुरोध किया है।

K. M. Pardesi
President

नक़ल पत्र परम सन्त परम दयाल श्री पं. फ़कीर चन्द जी महाराज नवंबर 1968 जो डा. आई.सी शर्मा को लिंचवर्ग वर्जीनिया भेजा गया।

प्रिय आई.सी. शर्मा, राधास्वामी !

1. तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद।

2. इस समय मैं 82 वर्ष का हूं। यह मेरी स्वाभाविक इच्छा है कि कोई आत्मज्ञानी पुरुष जो तुम्हारी तरह युवा हो और लगन वाला हो मेरे चोला त्यागने के बाद मानवता मन्दिर में मेरे उद्देश्य (मिशन) को आगे बढ़ावे। ऐसा व्यक्ति खोजना सरल नहीं है जो हर प्रकार से योग्य हो, जो सच्चे धर्म की सरल व वैज्ञानिक व्याख्या सीधे ढंग से ऐसी कर सके कि हर कोई उसके सार को, भाव को

समझ सके। मैंने कभी धन, पद या ख्याति (मशहूरी) प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया। इस लिए यह आवश्यक है कि जो आदमी मेरा उत्तराधिकारी हो वह भी ऐसा ही करे।

आपको मेरे उपदेशों का पूरा ज्ञान देने के लिए मैंने उर्दू में देहली गजट की कुछ प्रतियाँ समुद्रा डाक से भेजी हैं। इनमें मेरे दो सत्संग हैं जो सनातन या मानवधर्म पर उज्जैन में कुम्भ के मेले पर दिये गये थे। मेरे विचार में ये आपको लगभग तीन मास में मिल जायेंगे।

4. जब आपको मेरी इस इच्छा पर विचार करने का काफी समय प्राप्त हो कृपा करके मुझे साफ-2 अपने विचार लिखें। मैं इस मौके पर स्पष्ट कहना चाहता हूं कि आज तक मैंने किसी व्यक्ति को कोई भी काम उसकी स्वतंत्र इच्छा के विरुद्ध करने को विवश नहीं किया। इस लिए यदि आप चाहते हैं कि आपको इस काम के लिए नियत किया जाय तो यह निश्चय करलें कि आपकी अनुमति आपकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों और सन्तों जैसे गुणों

के अनुसार है और किसी तरह से भी आपकी घर की शान्ति के विरुद्ध नहीं है।

5. कृपा करके जब आप जुलाई 1969 में भारत आयें तो मुझे मिलने का शुभ अवसर दें उस समय मुझे तुम्हारे मन व आत्मा को टटोलने व यह पता लगाने का अच्छा मौका मिलेगा कि क्या कुदरत ने तुम्हें वो गुण अता किये हैं जिन्हें पूरी तरह से उभार कर इस प्रकार का काम सफलता से कराया जा सकता है ? मेरे लिए यह बहुत आवश्यक है कि मैं पात्र व्यक्ति का पूरा-2 परीक्षण करलूं व उसके पश्चात् निर्णय करूं। यदि मेरा पूरा परीक्षण व निरीक्षण यह स्पष्ट करेगा कि वो आवश्यक गुण तुम में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में उपस्थित हैं मैं उन्हें उभार कर तुम्हें इस योग्य बना सकता हूं कि तुम इस काम को निर्भय होकर कर सको। दाता दयाल जी ने मेरे साथ ऐसा ही किया था और मैं भी उस व्यक्ति के साथ वैसा ही करना चाहता हूं जो मेरे चोला छोड़ने के बाद मेरे काम (Mission)को चलाने के योग्य हो मुझे यह लिखने

की आवश्यकता नहीं कि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान, भाषण देने की योग्यता, तीव्रबुद्धि आदि-आदि के अतिरिक्त इस काम के करने के लिए पवित्रता, सच्ची लगन, भक्ति, तन्मयता व इस काम में लीन हो जाने के गुण भी आवश्यक हैं। यदि वे सभी गुण आप में भली प्रकार हैं तो ठीक है नहीं तो ऐसे गुणों को विकसित करने का काम ज़ारी रहना चाहिए।

6. अन्त में मैं यह बता देना चाहता हूं कि कोई यह जल्दी का काम नहीं है। मैं तुम्हारी इस बात को मानता हूं कि तुम्हें कुछ समय तक अमेरिका में रहना चाहिए जिससे तुम अपने व अपने परिवार की आवश्यकताओं के लिए आर्थिक साधन जुटा लो। सद् भावनाओं के साथ।

आपका फ़कीर

नक़ल पत्र डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा का उपरोक्त पत्र का उत्तर, दर्शन विभाग लिंचबर्ग वर्जीनिया।

दिनांक 19 दिसम्बर 1968

पूज्य सन्त सद्गुरुवक्त फ़कीर दयाल जी महाराज राधास्वामी !

मुझे अभी-अभी आपका दया से भरा हुआ पत्र प्राप्त हुआ है। कोई भी विश्वास नहीं करेगा कि आप 82 वर्ष के हो गये हैं। मेरे एक ताऊ जी हैं जो इस समय 112 वर्ष की आयु के हैं और वे गाजियाबाद में रहते हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ लम्बे समय तक रहें। मालिक हमारी इस इच्छा की पूर्ति करेंगे। आपकी आध्यात्मिक शक्ति व आशीर्वाद से केवल भारत को ही नहीं बल्कि सारे विश्व को लाभ उठाना है। मुझे ज्ञान है कि आप कभी कोई काम ऐसा नहीं करते जिस के लिए आपको सच्चे मार्ग से बाहर जाना पड़े। मुझे आपकी पुस्तकें मेरी बहिन के पति श्री रमेशचन्द्र शर्मा के घर पर विनय नगर में मिली थीं। मैं मात्र

एक बात जानता हूं जब मैंने उर्दू में वह कविता पढ़ी जो महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज ने आपको सम्बोधित करके लिखी थी और जिसकी पहली पंक्ति में लिखा था "तू तो आया नरदेही में धर फकीर का भेसा" तो मेरे रोंगटे खड़े हो गये। मैं नहीं जानता मुझे ऐसा क्यों हुआ, वह कविता मुझे बहुत प्यारी लगती है। कृपया मुझे वह किताब भेजें जिसमें यह कविता है। शायद वह हिन्दी की पुस्तक है। मैं आपकी देहली गज़ट की कापियों की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं साधना में अभी बहुत आगे नहीं बढ़ा हूं अभी सिर्फ एक घण्टा बैठता हूं। मैं अपनी ओर से यह कह सकता हूं कि मैं आपकी हर सेवा कर सकता हूं जिसके लिए आप मुझे योग्य समझते हैं। आपने भी कहा है व मेरा भी यही विचार है कि इसका निर्णय करने के लिए काफी समय है आप खूब जानते हैं। मेरे दोनों लड़के यहाँ पढ़ते हैं उनके लिए और आपकी कृपा से दर्शन के द्वारा आध्यात्मक सेवा करने के लिए मुझे कुछ समय के लिए यहाँ वापिस आना पड़ेगा। मुझे अध्यात्म में उन्नति करनी है। मुझे रुपये पैसों से मोह नहीं न शोहरत चाहता हूं

किन्तु मैं कुछ समय तक पढ़ाना चाहता हूं व पुस्तकें लिखना चाहता हूं। हालांकि मैं कुछ हद तक इन कामों की कुर्बानी भी दे सकता हूं लेकिन आप जानते हैं कि इसमें कितना समय लगेगा। आपने मुझे निरीक्षण करना व मुझे बेहतर भी, योग्य भी बनाना है।

मैं आपसे सम्मुख में बातें करूंगा व इस बारे में फिर लिखूंगा। आप कृपा करके अपना अधिक से अधिक आशीर्वाद भेजें। एक सप्ताह में मैं उस शिष्ठ मण्डल का प्रोग्राम भेज दूंगा जो आपके दिल्ली में फरबरी या मार्च में दर्शन करना चाहता है। इससे हमें कई प्रकार का लाभ मिलेगा। मेरी पत्नी को अध्यात्म में उन्नति करनी है वह भले ही अधिक धन चाहती हो जिसकी मैं पर्वाह नहीं करता ताहम यह ज़रूरत कुछ सालों काम करने से पूरी हो सकती है। यहां पर संभव है कि मुझे कुछ और समय के लिए नौकरी मिल जाय लेकिन मैं उससे पूर्व भारत आऊंगा। यदि नौकरी 1 साल की होगी तो पूरी 10 मास की और देरी हो जायेगी मुझे तो पता नहीं आप बेहतर जानते हैं। मगर मुझे यहाँ अच्छा काम करना है तो

यहाँ ठहरने की आज्ञा दें । मैं आपको विस्तार में फिर लिखूंगा । आपकी आसीस की प्रतीक्षा कर रहा हूं ।

आपकी सेवा में

ईश्वर चन्द्र शर्मा

मुझे आशा है कि आप मुझे आसीस व शक्ति देंगे ताकि मैं अधिक आध्यात्मिक उन्नति कर सकूं । सिर्फ आपको मिलने पर ही मैं सब कुछ बता सकूंगा किन्तु मेरी सेवाएँ आपको समर्पित हैं । आपने उस छोटे कागज के टुकड़े (1 रुपये के नोट पर) दस्तखत करके आसीस दी थी जो मैं अपने पास रखता हूं, आप मुझे कब आज्ञा देंगे कि उसे मैं अपनी पत्नी को दे दूं आप बेहतर जानते हैं उसे आपके आसीसों की बेहद आवश्यकता है उसका दिल बहुत नाज़ुक है । मैंने उसे अभी तक यह नहीं बताया है कि हज़ूर ने मुझे क्या लिखा है ? मैं काफी समय तक उसे नहीं बताऊंगा । कृपा करके अपनी आसीस भेजते रहें अधिक शीघ्र लिखूंगा । मेरा साष्टांग प्रणाम व राधास्वामी !

आपकी सेवा में

ईश्वर चन्द्र

वसीयतनामा

मैं फ़कीर चन्द आयु 94 साल सुपुत्र पं. मस्तराम सुपत्र श्री दसौंधी राम निवासी मकान नं. 18 रेलवे मंडी होशियारपुर का हूं जो कि मैंने अपने गुरु महर्षि शिवव्रत लाल जी वर्मन जो कि मेरे सत्तगुरु थे उनके हुक्म और आज्ञा के अनुसार कि शरीर छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना उनका हुक्म था इस लिए मैंने सेठ दुर्गादास जो कि अब मर चुके हैं उनकी मदद से आज से पहिले 18 साल हुए हैं मानवता मन्दिर होशियारपुर की नींव रखी थी और उसका ट्रस्ट कायम किया है जो कि रजिस्टर्ड है। यहाँ का सारा काम ट्रस्ट करेगा। मेरे परिवार का कोई ट्रस्टी नहीं बन सकता है। हां ! पर सेवा कर सकता है. मन्दिर में नौकरी कर सकता है, मगर मन्दिर के इन्तज़ाम में कोई दखल नहीं दे सकता है। मैंने अपनी ज़िन्दगी के तजुर्बे, रूहानी, गृहस्थी, मज़हबी लाईन पर सफर करने के वाद यह नतीजा निकाला है कि सब से पहिले दुनिया को इन्सान बनने की ज़रूरत है। इस लिए मैंने गृहस्थ, सोशल और पोलिटिकल लाईन वालों को इन्सान बनने की आवाज़ दी है। मेरी मन्दिर से ग़ैरहाज़िरी में श्री मुन्शीराम भगत जो यहां के सेक्रेटरी हैं उनको नामदान

देने, जीवों को हदायत करने और दु:खी अशान्त प्राणियों की मदद करने के लिए नियुक्त किया है, और इनके बाद या इनकी मौजूदगी में डा. आई· सी. शर्मा जो बड़े तालीम याफ्ता और परमार्थ और अभ्यास वगैरह के विशेषज्ञ है वह दो साल के बाद अमरीका से पेन्शन लेकर यहाँ आ जायेंगे और मेरी जगह काम करेंगे। और वह जब यहां नहीं होंगे तो उस समय भगत मुन्शीराम जो मेरी जगह सत्तगुरु की हैसीयत में काम करेंगे। बाकी मन्दिर का सारा हिसाब किताब ट्रस्ट के हाथ में रहेगा, यह ट्रस्ट की ज़िम्मेवारी होगी। मैंने शिशु स्कूल खोला हुआ है यहां लड़कों से फीस नहीं ली जाती। पहिली बार जब बच्चा दाखल होता है तो उनके मां बाप से तहरीर लेनी पड़गी कि तीन बच्चों से ज़्यादा बच्चे पैदा न करें, अगर तीन से ज़्यादा बच्चे पहिले हों तो आइन्दा न पैदा करें। बाकी सारा काम ट्रस्ट के हवाले है, मेरा इससे कोई मतलब नहीं है। मेरे मरने के बाद मेरी हड्डियाँ मानवता मन्दिर में ज़मीन में गाड़ दी जावें और उनके ऊपर मानवता मन्दिर का झंडा जो कि इस समय मानवता मन्दिर पर लहराता है, वह झंडा मेरी हड्डियों पर खड़ा कर देवें। मेरा ट्रस्ट किसी दूसरे ट्रस्ट या संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है, मैंने न किसी संस्था से कुछ लिया है बल्कि दिया है। मेरे सत्तगुरु की समाधि ज़िला बनारस में लोगों ने बनवा दी है। मेरे सन्तमत में समाधि, कब्र, मक़बरा

या मरे हुए महापुरुषों की पूजा नहीं है। इस लिए मेरा कोई सम्बन्ध शिव समाध से नहीं है। इज्जत के ख्याल से कुछ न कुछ सालाना देता रहा हूं। अगर मेरी मर्ज़ी के मुताबिक वहां कोई आचार्य काम करे जब तक हो सकेगा मैं मदद करता रहूंगा, वर्ना नहीं और न ही उनका कोई हक़ मुझ पर है। मेरे नाम पर बहुत से देश-विदेश में मानवता के सेण्टर खुले हुए हैं वहां के आचार्य अपना-अपना काम करते हैं उनका और मेरे ट्रस्ट का सिवाय प्रेम के और कोई सम्बन्ध नहीं है। इस लिए अब मैंने बकायमी होशोहवास और दुरुस्ती अकल के साथ व राये हित मन्दिर मजकूर पहिली तथा आखिरी वसीयत लिख दी है कि प्रमाण रहे। मिति 20-4-80

लेखक:—बलराज कुमार वसीका नवीस होशियारपुर
नं. 385 उजरत 2/ –

श्री फ़कीर चन्द वसीयत कर्ता
हस्ताक्षर —अंग्रेजी में

गवाह नं. 1 श्री केशव चन्द्र ऐडवोकेट
गवाह नं. 2 डा. कुन्दन लाल जौड़ा पुत्र बुड्ढामल जौड़ा

—o-::-o—

विशेष सूचना

सब सत्संगियों और मानव मन्दिर के पाठकों को पुनः यह सूचना दी जा रही है कि परम सन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज श्री हजूर परम सन्त परम दयाल जी महाराज के उत्तराधिकारी पूर्ण रूप से होशियारपुर पधार चुके हैं और स्थायी रूप से यहां रहते हैं।

सेक्रेटरी

शोक समाचार

बड़े दुःख से सूचित किया जाता है कि श्री जग्या जी हनमकुण्डा (आ: प्र:) निवासी जो हजूर के परम भक्त थे अचानक स्वर्गवास हो गये हैं। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे। मानवता मन्दिर के सभी सदस्य उनके परिवार के साथ शोक में सम्मिलित हैं।

सेक्रेटरी

टूर प्रोग्राम हजूर मानव दयाल जी महाराज ।

16-5-82	प्रस्थान	रात की रेलगाड़ी द्वारा होशियारपुर से
17-5-82		आगमन देहली कश्मीर मेल द्वारा प्रातः,
,, ,, ,,		निवास देहली पताः—मारफत ओ.पी. सेलूजा आर-850 न्यू राजिन्दर नगर, नई देहली-फोन नं. 582557
18-5-82	प्रस्थान	दोपहर रेल गाड़ी द्वारा मुरादाबाद को
,, ,,		निवास-मुरादाबाद
19-5-82	प्रस्थान	प्रातः सड़क द्वारा बिलारी को
19,20,21-5-82		निवास-बिलारी
22-5-82	प्रस्थान	सड़क द्वारा मुरादाबाद, मुरादावाद से रेल द्वारा हापुड़, हापड़ से सड़क द्वारा मोदीनगर गांव अहमदपुर
22,23,24-5-82		निवास-अहमदपुर
25-5-82	प्रस्थान	मोदीनगर से रेल गाड़ी द्वारा सहारनपुर, सरसों हेड़ी
25,26,27-5-82		निवास-सरसों हेड़ी
28-5-82		पहुंच होशियारपुर

सेक्रेटरी